ममता कालिया द्वारा रचित उपन्यास 'अँधेरे का ताला' में सामाजिक यथार्थ का चित्रण

सोमवीर

हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय,
अटेली, हरियाणा।

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 4, Issue 3, (May-June 2016)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

सार

समाज के अन्तर्गत विभिन्न जातियाँ व वर्ग समूह आते हैं । मनुष्य समाज में रहकर ही अपना सम्पूर्ण विकास कर सकता है । साहित्य समाज का दर्पण होता है । जो समस्याएँ समाज को प्रभावित करती हैं उन्हीं का चित्रण साहित्य में किया जाता है । साहित्यकार अत्यन्त संवेदनशील होता है। समाज को प्रभावित करने वाली छोटी से छोटी घटना भी उसे रचना लिखने को प्रेरित कर देती है । ममता कालिया जी ने भी समज में फैली समस्याओं का अपने उपन्यास में यथार्थ चित्रण किया है ।

परिचय

इस शोधपत्र के अन्तर्गत 'अँधेरे में ताला' में सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया गया है । सामाजिक यथार्थ के अन्तर्गत जातीय भेद-भाव की भावना, चिकित्साकों की लापरवाही, पुलिस प्रशासन में भ्रष्टाचार, समाचार पत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार, समाज में फैले अंधविश्वास, समाज में फैली निरक्षरता, निम्न श्रेणी के कर्मचारियों का शोषण, मानवतावादी भावना, शिक्षिकाओं का साहस का चित्रण किया है ।

जातीय भेद-भाव की भावना

समाज में प्राचीन काल से ही जाति प्रथा चली आ रही है । पहले यह कर्म के आधार पर होती थी । परन्तु आजकल जन्म के आधार पर होने लगी है । समाज में निम्न जाति के लोगों को हेय दृष्टि से देखा जाता है । उनसे उच्च वर्ग के लोग घृणा करते हैं । उच्च वर्ग के लोग स्वयं को स्वच्छ व इन्हें अशुद्ध समझते हैं । सरकार के निरन्तर किये जाने वाले प्रयासों के बावजूद यह बन्द होने के स्थान पर तेजी से फैलती जा रही है । स्कूल व विश्वविद्यालय में जहां शिक्षा दी जाती है वहां भी इसका विकृत रूप देखने को मिलता है । रानी लक्ष्मी बाई महाविद्यालय में अनुसूचित जाति वर्ग की छात्राओं की संख्या बढ़ रही थी । इस को देखकर नन्दिता प्रसन्न थी परन्तु उच्च वर्ग की प्रध्यापिकाएं इससे प्रसन्न नहीं थी । नन्दिता ने सुबह की सभा में धार्मिक उद्धरण पढ़ाये जाने के पक्ष में थी जबकि दलित जाति की प्राध्यापिकाएं महात्मा गांधी, विवेकानन्द, अम्बेडकर आदि के विचार पढ़ाये जाने के पक्ष में थी ।

इस प्रकार दोनों में गतिरोध पैदा हो गया। सुबह की सभा में यदि स्वर्ण अध्यापिकाएं होती थी तो स्वर्ण छात्राएं भी इसमें भाग लेती थी। यहां शिक्षा के नाम पर भी भेदभाव किया जाता था । यदि कोई दलित छात्रा संस्कृत लेना चाहती थी तो मणिक वर्मा जो स्वर्ण जाति की थी कहती थी, "दीदी, ये सब विमन्दित बुद्धि की लड़कियां हैं । इन्हें देववाणी से क्या मतलब? इनका उच्चारण इतना अशुद्ध होता है कि संस्कृत भी असंस्कृत लगती है ।"

महाविद्यालय दो गुटों में बंट गया था । स्वर्ण वर्ग की प्राध्यापिकाएं सोमवार को सफेद, मंगलवार को सिन्दूरी, बुधवार को हरी, गुरूवार को गेरूआ, शुक्रवार को बैंगनी व शनि को काली साड़ी पहनकर आती थी । ऐसा वे अपने आप को दलित प्राध्यापिकाओं से अलग रखने के लिए करती थी । यहां तक कि सभी ने अपने चाय के कप भी निर्धारित कर रखे थे । स्वर्ण प्रध्यापिकाएं बाथरूम करने भी एक साथ जाती थी । इन सबसे दलित प्राध्यापिकाएं दु:खी हो जाती। नन्दिता उन्हें हिम्मत बंधाती कि आगे आने वाले समय में छात्राएं तुम्हारे विषय में अच्छे अंक लेंगी । इस प्रकार महाविद्यालय में भी जातीय भेदभाव साफ देखने को मिलता है। जब छात्रों को शिक्षा प्रदान करने वाले ही जातीय भेदभाव करेंगे तो वे छात्रों को क्या शिक्षा देंगें ।

चिकित्सकों की लापरवाही

नन्दिता महाविद्यालय की मुख्य प्राध्यापिका थी । जब वह एक लड़की को महाविद्यालय में प्रवेश देने से मना कर देती है तो उसका भाई नन्दिता पर पेपरवेट से हमला करके भाग जाता है । नन्दिता के सिर से खून निकलने लगता है । नन्दिता को जब सरकारी अस्पताल ले जाया गया तो वह चक्कर आकर वहीं बैठ जाती है । दिवाकर नन्दिता जी का पति उसे व्हील चेयर पर लाता है । आपात कक्ष में भी शीघ्रता से कोई कार्य नहीं किया गया। डॉक्टर आराम से चाय पी रहा था । दिवाकर ने नन्दिता को बैड पर लिटाकर डॉक्टर से चिकित्सा की प्रार्थना की । डॉ. को मरीज की कोई परवाह नहीं होती है । डॉक्टर बड़े इत्मीनान से कहता है "जब तक एफ.आई.आर. की कॉपी यानि मेमो नहीं आता, हम इन्हें कोई उपचार नहीं दे सकते ।"

दिवाकर ने कहा "इनका बहुत खून निकल चुका है । मेहरबानी कर आप इलाज शुरू कर दें । मेमो आता ही होगा ।" परन्तु डॉक्टर एक रजिस्टर में कुछ लिखने लग जाता है । वह मरीज की तरफ ध्यान नहीं देता है । दिवाकर खीझकर कहता है, "आपात कक्ष में पेशेन्ट आया है और आप चुपचाप बैठे हैं । यही है आपकी आचार संहिता?"

डॉक्टर कहता है, "आचार संहिता का ही पालन कर रहा हूँ । आप मेमो ले आइये।"

दिवाकर परेशान होकर पुलिस थाने में जाकर पुलिस से पूछताछ करते हैं परन्तु वे कहते हैं मेमो तैयार होने में समय लगेगा । वे वापस आकर डॉक्टर से ईलाज की प्रार्थना करते हैं परन्तु डॉक्टर मना कर देता है । बहुत बार करने पर वो नन्दिता को टॅट वैक की एक सूई लगा देता है । बाद में दिवाकर नन्दिता का ईलाज प्राइवेट अस्पताल में करवाते हैं । इस प्रकार आज के समय में डॉक्टर के मन से इंसानियत नाम का शब्द गायब हो चुका है । डॉक्टर तो लाखों लोगों की जान बचा सकते हैं । परन्तु वर्तमान समय में डॉक्टर अपने पेशे के प्रति वफादार नहीं है । डॉक्टर लोग मरीजों की तरफ ध्यान न देकर पैसे की तरफ ध्यान देते हैं। यदि कोई आदमी चिकित्सा के बिना मर जाये तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता है ।

पुलिस प्रशासन में भ्रष्टाचार

जब नन्दिता घायल हो जाती है तो बिरजू व सुरेन्द्र महाविद्यालय कर्मचारी पुलिस चौकी में खबर कर आते हैं । मगर चौकी की फोर्स समय पर नहीं पहुंचती है । वह रक्त के निशान मिट जाने के बाद पहुंचती है । बाद में वह डॉक्टर, कैमिस्ट, दाई सबका बयान लेती है । हड़बड़ी में हमलावर अपनी डायरी नन्दिता के आफिस में छोड़ जाता है। पुलिस ये सब चीजें अपने कब्जे में कर लेती है । तीन दिन तक पुलिस अविनाश को ढूंढती है परन्तु वह उसे ढूंढ नहीं पाती है । पुलिस अपना कर्तव्य सही प्रकार से नहीं निभाती । यदि वह तुरन्त कार्यवाही करती तो अविनाश जैसे मुजरिम तुरन्त जेल में दिखाई दें ।

अन्य घटना में दशहरे वाले दिन नन्दिता प्रोफेसर सुनीता कक्कड़ के साथ सिनेमा देखने चली जाती है । घर आते समय नौ बज जाते हैं जाते हैं। वे दोनों रिक्शे से घर वापिस लौट रही थी तो किसी मोटरसाइकिल वाले ने नन्दिता का पर्स छीन लिया व भाग गया । वह पुलिस चौकी पहुंची । पुलिस ने बिना कुछ पूछे सबसे पहले रिक्शे वाले की धुनाई कर दी । बाद में पता चलता है कि प्रथम सूचना रपट लिखने के लिए पैन नहीं है । बाद में उनकी शिकायत लिखी जाती है। उनसे कई प्रश्न पूछे जाते हैं । बाद में पुलिस वाला मोटरसाइकिल का नम्बर न नोट करने पर डांटता है । जब बाद में नन्दिता को पता चलता है कि यह कार्य छात्रों ने किया है तो वह पुलिस से छात्रावास की तलाशी लेने को कहती है । पुलिस इस कार्य का करने से मना कर देती है क्योंकि किसी भी छात्र को हाथ लगाते ही विधायक का फोन आ जाता है । सभी छात्रों की पहचान ऊँचे पद पर आसीन लोगों से होती है । पुलिस का काम लोगों की रक्षा करना होता है परन्तु पुलिस ही भ्रष्ट हो चुकी है । वह अपना काम समय पर नहीं करती है। वह गरीबों के साथ न होकर अमीरों की साथ होती है । वह मजबूरी की सहायता नहीं करती बल्कि उनका फायदा उठाना चाहती है । पुलिस गवाह को बार-बार परेशान करती है परन्तु उचित कार्यवाही नहीं करती है । यदि पुलिस तुरन्त कार्यवाही करे तो अपराधी को तुरन्त पकड़ा जा सकता है ।

समाचार पत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार

समाचार पत्र पहले सच को छापते थे । उनका काम पहले सच को सामने लाना था । वे निष्पक्ष रहकर अपना कार्य करते थे । परन्तु आजकल समाचारपत्र भी भ्रष्ट हो गये हैं । वे घटनास्थल पर पुलिस से पहले पहुंच जाते हैं, परन्तु बिना छानबीन किये कई बार गलत खबर भी छात्र देते हैं । समाचार पत्र अमीर लोगों के हाथों की कठपुतली हो गये हैं । अमीर जैसे चाहें इन्हें अपने पक्ष में इस्तेमाल कर सकते हैं । परीक्षा के समय नन्दिता कुछ छात्राओं को नकल करते हुए पकड़ लेती है । अगले ही दिन अखबार में खबर छप जाती है कि 'यहां तलाशी के नाम पर लड़कियों को नंगा कर दिया जाता है ।' नन्दिता को यह बात अच्छी तरह पता है कि यह खबर नकल करते पकड़ी गयी किसी छात्रा के अभिभावक का है । वे नन्दिता पर ये खबर छपवाकर दबाव डालना चाहते थे । नन्दिता पत्रकारों को समझाना चाहती थी कि उसने कोई गलत कार्य नहीं किया है । वो एक अन्य शिक्षिका करूझा को कहती है, "परीक्षा पर उसे कोई रिपोर्ट चाहिए तो हमारे पास आयें । लड़कियां क्या रिपोर्ट देंगी।" इस प्रकार अखबार किसी एक पक्ष की बात को पैसे के लालच में छाप देता है । वह यह ध्यान नहीं देता कि इस बात में कितनी सच्चाई है । उसका स्वार्थ सिर्फ पैसा कमाने का होता है । वह लड़कियों से पूछकर खबर छाप देता है परन्तु प्राध्यापिका से पूछना जरूरी नहीं समझते, इस प्रकार आजकल समाचार पत्र भी भ्रष्ट हो चुके हैं ।

समाज में फैला अंधविश्वास

आज के आधुनिक युग में भी समाज में कई प्रकार के अंधविश्वास प्रचलित हैं । ये अंधविश्वास समाज को खोखला करते जा रहे हैं। ये अंधविश्वास समाज की उन्नति में बाधा हैं । इनके कारण समाज दूषित होता जा रहा है । लोग प्राचीन काल से इन्हें ज्यों का त्यो मानते आ रहे हैं । नन्दिता ने एक बार मानवता का प्रदर्शन करते हुए अपने कॅलेज के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को कुछ सामान दिया। सर्दियों में घण्टाघर से खरीद कर नन्दिता ने चपरासी को कोट चौकीदार को कम्बल और चपरासिनों को शाल मंगवा दिया था । पहले तो कर्मचारी खुश हो जाते हैं। परन्तु अगले दिन वे सभी इन कपड़ों को ऑफिस में पटक जाते हैं और कहते हैं "हम नहीं पहनते ये गर्म कपड़े । ये मरे मुर्दों के कपड़े हैं।" नन्दिता को बहुत गुस्सा आता है । वह उन्हें समझाती है कि यह कपड़े मरे हुए लोगों के नहीं हैं । परन्तु इन लोगों के मन में यह धारणा बैठ गयी थी कि घण्टाघर की पटरी से जो कपड़े मिलते हैं वे इसलिए सस्ते होते हैं क्योंकि वे मुर्दा लोगों के कपड़े होते हैं । वे बिना सच्चाई जाने इन कपड़ों को पहनने से इनकार कर देते हैं। इस कारण वे अपना ही नुकसान करते हैं । उन्हें सर्दी में ठिठुरना पसन्द है परन्तु मुर्दा लोगों के कपड़े पहनना पसन्द नहीं । वे अन्धविश्वास में इस तरह जकड़े हुए हैं कि वे अपना हित अहित देखना भूल जाते हैं ।

समाज में फैली निरक्षरता

समाज को शिक्षित करने के लिए सरकार विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चला रही है, परन्तु अभी भी बहुत बड़ी संख्या में लोग निरक्षर हैं। इस निरक्षरता की वजह से हमारा देश उन्नति नहीं कर पाता है । लोगों की मानसिकता शिक्षा के अभाव में सही ढंग से विकसित नहीं हो पाती है । वे लोग अपना सही बुरा नहीं सोच पाते हैं । शिक्षा का प्रसार करने हेतु महाविद्यालयों के राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर लगाये जाते हैं। माघ के महीने में संगम तट पर माघ मेला जुटा होता है । यहीं पर रानी लक्ष्मीबाई गर्ल्स डिग्री महाविद्यालय के भी तम्बू लगाये जाते हैं । यहां छात्राएँ सुबह-शाम लोगों के पास जाकर उन्हें पढ़ाती है । वे लोगों को स्वास्थ्य संबंधी बातें भी बताती हैं । परन्तु जब से ग्रामीण स्त्रियों को परिवार नियोजन सम्बन्धी बाते बताती हैं भड़क जाती हैं व छात्राओं को भला-बुरा कहने लगती हैं । वे कहती हैं, "इहां हम धरम-करम करने आवत हैं । गंगा मैया के आगे गन्दी बात मुंह से निमलो न । धरे रहो अपना छल्ला (कॉपर टी) और झिल्ली (कण्डोम) ब्याही न जनीं चली हैं हमें सिखाय ।"

इस प्रकार ग्रामीण स्त्रियां परिवार नियोजन का महत्व नहीं समझती हैं। वे निरक्षरता के कारण ऐसा कर रहीं होती हैं । यदि उन्हें भी शुरू से शिक्षा दी जाती तो वे परिवार नियोजन का महत्व समझती। वे देश की उन्नति में बाधक हमारी आबादी को कम करने में सहायक होती ।

निम्न श्रेणी के कर्मचारियों का शोषण

निम्न श्रेणी के कर्मचारियों को हीन समझा जाता है । उच्च श्रेणी के लोग इनका शोषण करते हैं । वे लोग मानवता को भूल जाते हैं। वे भूल जाते हैं कि भगवान ने सब मनुष्यों को समान बनाया है । नन्दिता ने सर्दियों में सभी अध्यापिकाओं से चन्दा मांगकर चतुर्थ श्रेणी की कर्मचारी ननकी को शाल दी । यह बात सभी अध्यापिकाओं को पसन्द नहीं आई । अगले ही दिन सभी अध्यापिकाएं अपनी भड़ास निकालना शुरू कर देती हैं। पहली घण्टी में तिवारी जी ननकी को डांट देती हैं कि उसकी कुर्सी पर इतनी धूल है । वह अपना काम ध्यान से नहीं करती । ननकी जब चाय बनाती है तो चाय का कप गिर जाता है । पायल बहन जी गुस्से से कहती है, "लो बोलो चाय खत्म भी हो गयी, तुमने हमें पूछा तक नहीं । ए ननकी तुम्हारे शॉल में हमने भी चन्दा

दिया है । तुम हमीं से चालाकी करती हो ।" मानिक बहन जी कहती हैं, "ननगकी तुमने सारी चाय खत्म कर दी, हमें मिली ही नहीं, शॉल ओढ़ कर तुम तो मेमसाब बन गयी चाय भी नहीं दे सकती ।"

इस प्रकार बारी-बारी से सभी बहन जी ने ननकी पर अपना गुस्सा उतारा । ननकी तिवारी बहन जी के लिए बाहर से चाय वाले से चाय लेकर आयी तो चाय देते समय एक लड़की का धक्का ननकी को लगा और गिलास की चाय तिवारी बहन जी पर छलक गयी। तिवारी बहन जी गुस्से से बोली "ननकी, तुमने तो हद कर दी । खुद नया शॉल क्या ओढ़ लिया दूसरों के कपड़ों को टाट-पट्टी समझने लगी । शर्म नहीं आती, चाय गिरा दी । मेरा पांच सौ का शाल खराब कर दिया ।"

ननकी को शॉल अब काटने लगी । वह नन्दिता को शॅल वापिस करते हुए कहते है "नहीं बहन जी, आपके हाथ जोरत हैं, हम शॉल न लेव । सुबह से मार फबती सुन-सुन हमार छाती फट गयी ।"

इस प्रकार लोगों के अन्दर मानवीयता खत्म हो गयी है । वे सब अपनी जरूरतों को महत्व देते हैं । वे अपना स्वार्थ पूरा करना चाहते हैं। यदि कोई चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की सहायता करना भी चाहता है तो उसका परिणाम इन्टरमीडिएटर कॉलेज के प्राचार्य जैसा होता है । वे आत्मविश्वास से भरे तरक्की पसन्द ख्याल के आदमी थे । वह चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों की नियुक्ति में किसी नियम को लेकर अड़ गये । प्रतिद्वंद्वी खेमे के आदमियों ने दिन दहाड़े सभी लोगों के सामने उसकी हत्या कर दी । इस प्रकार सभी चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों का शोषण करते हैं । यदि कोई उनके भले की बात सोचता है तो उसका परिणाम उसे अपनी जान देकर चुकाना पड़ता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] तीर्थेश्वर सिंह, समकालीन हिन्दी कविता की यथार्थवादी चेतना, प्रथम संस्करण, 2006, मानसी पब्लिकेशन, दरियागंज, दिल्ली ।

[2] नारायण सिंह, बीसवीं शताब्दी, हिन्दी उपन्यास : नए दो पहलू, प्रथम संस्करण, 1976, लोकवाणी प्रकाशन, कृष्ण नगर, दिल्ली।

[3] ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ, 2008, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली ।

[4] राजकुमार सैनी, यथार्थवाद और सौन्दर्य शास्त्र, प्रकाशक: टाइम बुक्स, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली, मुद्रक: कम्पीटेंट प्रिंटर्स, दिल्ली ।

[5] शशिबाला शर्मा, मुक्तिबोध की कविता में यथार्थबोध, प्रथम संस्करण, प्रकाशक: प्रवीण शर्मा, अशोक विहार, दिल्ली ।